International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 08-02-2022, Accepted: 12-02-2022, Published: 11-03-2022
Volume 8, Issue 2, 2022, Page No. 18-22

हिन्दी में अनूदित बाल कहानियाँ

संध्या
शोधार्थी, हिन्दी अनुवाद, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
मुख्य धारा के साहित्य की ही तरह बाल साहित्य भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह वर्तमान युग की अनिवार्य आवश्यकता है। बाल साहित्य की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया जा रहा है। अफ़सोस की बात है कि हमारे देश में अधिकतर बच्चों को पाठ्य–पुस्तकों तक ही सीमित रखा जाता है। माता–पिता उन्हें खिलौने, वीडियो गेम इत्यादि तो उपलब्ध करवाते हैं पर किताबों की तरफ़ उनका ध्यान कम ही जाता है। परिमाण और विविधता की दृष्टि से हिन्दी बाल साहित्य बहुत समृद्ध है। इनमें अनूदित बाल साहित्य का योगदान बहुत अधिक है। बहुत से प्रकाशन गृह और संस्थान इस दिशा में काम कर रहे हैं। हिन्दी में अनूदित बाल साहित्य में सबसे अधिक अनुवाद अंग्रेजी से हिन्दी में हुए हैं। इनमें सबसे अधिक समृद्ध और उत्कृष्ट अनुवाद कहानियों का हुआ है। इक्कीसवीं सदी में इस दिशा में सबसे अधिक कार्य हुआ है। अंग्रेजी से हिन्दी में अनूदित बाल कहानियाँ विविधता की दृष्टि से भी बहुत समृद्ध हैं। इनमें आम जीवन की कहानियाँ, पशु–पक्षियों पर आधारित कहानियाँ, पर्यावरण संबंधी कहानियाँ, जीवनी संबंधी कहानियाँ आदि प्रमुख हैं।

मूल शब्द: बाल साहित्य, हिन्दी अनुवाद, कहानियाँ, विषय

प्रस्तावना

बाल साहित्य को पढ़ना किसी भी समाज के बाल मन को जानने की बहुत ही उत्कृष्ट और सरल प्रक्रिया है। बाल साहित्य का इतिहास बहुत पुराना है। इसका मौखिक एवं लिखित दोनों ही प्रकार का इतिहास मौजूद है। भारत में प्राचीन काल से ही 'हितोपदेश', 'पंचतंत्र' तथा कथासरित्सागर के माध्यम से बाल साहित्य की लम्बी परम्परा रही है। लोक कथाओं, दन्त कथाओं के माध्यम से भी बाल साहित्य पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप में चलता आ रहा है। इस क्रम में बीरबल, तेनालीराम, लाल बुझक्कड़ शास्त्री, गोपाल भांड आदि नाम प्रचलित हैं।

आधुनिक हिन्दी साहित्य के निर्माता भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 'बाल दर्पण' (1882) नामक पत्रिका निकाली थी, इस प्रकार देखें तो हिन्दी बाल साहित्य का इतिहास आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास के साथ मान सकते हैं। हिन्दी बाल साहित्य में विविधता एवं प्रौढ़ता की शुरुआत बीसवीं शताब्दी में विद्यार्थी (1914), शिशु (1916), बालसखा (1917) जैसी पत्रिकाओं के प्रकाशन से हुआ। इनके अतिरिक्त बालक (1927), वानर (1931), कुमार (1932), बाल बोध (1946), बाल भारती (1947), मनमोहन (1949), बाल मितान (1955), पराग (1958), राजाभैया (1959), बाल वाटिका (1962) और नंदन (1964) से लेकर चंपक (1968), देवपुत्र (1969), गुड़िया (1973), मेला (1979), चकमक (1985), बालहंस (1986), समझ झरोखा (1989), साइकल (2018) आदि पत्रिकाओं ने हिन्दी बाल साहित्य को लगातार समृद्ध किया।

शोध आलेख

हिन्दी में अनूदित बाल कहानियों की संख्या काफ़ी ज़्यादा है। हिन्दी में बांग्ला बाल कहानियों का सबसे ज़्यादा अनुवाद हुआ है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर, उपेंद्रकिशोर रायचौधुरी सुकुमार राय, विभूति भूषण बंद्योपाध्याय, सत्यजीत राय जैसे मूर्धन्य लेखकों की बाल कहानियाँ अनूदित और रूपांतरित होकर हिन्दी में आईं। इस तरह मराठी, गुजराती आदि भाषाओं की बाल कहानियाँ भी हिन्दी में अनूदित हुई। विदेशी भाषाओं में अंग्रेजी और रूसी बाल कहानियों का सबसे अधिक अनुवाद हुआ। भारतीय भाषाओं में सबसे अधिक बाँग्ला बाल कहानियों का हिन्दी अनुवाद हुआ है। हिन्दी में अनूदित बाल कहानियों के कुछ उल्लेखनीय संग्रह हैं– विभूति भूषण बंद्योपाध्याय की 'किशोर कहानियाँ' (अनु. अमर गोस्वामी), 'वामाचरण का ख़ज़ाना' तथा 'तालनवमी' (अनु. अमर गोस्वामी), रवींद्रनाथ ठाकुर का 'दद्दू की कहानियाँ' (अनु. अमर गोस्वामी) 'वापसी', उपेंद्रकिशोर रायचौधरी की 'बुलबुल की किताब' (अनु. स्वप्नादत्त), शरतचंद्र चट्टोपाध्याय की 'वह भयानक रात' (अनु. अमर गोस्वामी) मोमोको इशिई का 'लालची बछिया गुलाबो' (अनु. मंजुला माथुर), वी सुटेयेव की 'रूसी और पूसी', विक्तोर वज्दायेव की 'लाल कलगीवाला मुरगा' (अनु. योगेंद्र नागपाल) तथा जुज्जा और टॉम वाइजलैंडर का 'कजरी गाय झूले पर' (अनु. अरविंद गुप्ता)।

पंजाबी के चर्चित कथाकार गुरुदयाल सिंह की 'छोटी–छोटी बातें' (2010) भी बात की बात में बहुत कुछ सिखाने वाली सुंदर कहानी है। इसका हिन्दी अनुवाद जतिंदर कुमार ने किया है। इस तरह जिलानी बानो की बाल कहानियों में बाल हृदय की संवेदना है। 'जीलानी बानो की दो बाल कहानियाँ' (2007) का हिन्दी अनुवाद शम्स इक़बाल ने किया है। शरतचंद्र बडोदेकर की एक हास्यपूर्ण मराठी कहानी का 'भाल की तमन्ना' (2014) शीर्षक से पाणंदीकर ने हिन्दी अनुवाद किया है। ऐसे ही अंग्रेजी के प्रसिद्ध कथाकार मुल्कराज आनंद की लिखी 'मोरा' (1972) एक हाथी के बच्चे की संवेदनशीलता से भरपूर कहानी है। रस्किन बॉण्ड (ज. 1934) की लगभग सभी अंग्रेजी कहानियों का हिन्दी में अनुवाद हुआ है। उनके अनूदित कहानी संग्रहों में 'साहसिक कहानियाँ' (2011), 'रंग–बिरंगी कहानियाँ' (2012) तथा 'हास्य–विनोद की कहानियाँ' (2012) बहुत मशहूर है। अंग्रजी से अनूदित कांतां की 'बरास्ता तरबूज' (2011) भी मज़ेदार बाल कहानी है।

इसी तरह गीता धर्मराजन की एक चुस्त, चंचल अंग्रेजी कहानी 'रेड काइट' का 'लाल पतंग' (1984) शीर्षक से रमेश बक्षी ने बहुत सुंदर हिन्दी अनुवाद किया है। जगदीश चंद्रिकेश ने जर्मनी के प्रसिद्ध कथाकार पीटर हेबल की बाल कहानियों का 'अनोखी शादी' (2003) शीर्षक से अनुवाद किया है।

हिन्दी में भारतीय भाषाओं से अनूदित पुस्तकों में 'सूरज और मोर' (2003) मेघालय की बड़ी ही अच्छी लोककथाओं की पुस्तक है, जिसके लेखक हैं वेवस्टार डेविस जीरवा तथा क़िताब का हिन्दी अनुवाद किया है आल्मा सोहिल्या ने। हिन्दी में अनूदित बाल कथाओं की कुछ और महत्त्वपूर्ण पुस्तकें हैं, 'तेरह अनुपम कहानियाँ', 'जादू का दीपक' (रूपा श्रीकांत व्यास), तारा तिवारी की 'सोना की कहानी' (अनुवाद रू मोहिनी राव), कामाक्षी बालसुब्रह्मण्यम की 'बरसात कब होगी' (अनुवादः रमेश बक्षी) तथा 'मुत्थू के सपने' (अनुवादः रमेश बक्षी), कमला नायर की 'जिस दिन नदी बोली थी' (अनुवादः सुरेश उनियाल), शांता रंगचारी की 'युग–युग की कहानियाँ' (अनुवादः मोहिनी राव), लीला मजूमदार की 'बड़ा पानी' (अनुवादः इंद्रा नूपुर), लीलावती भागवत की 'स्वर्ग की सैर तथा अन्य कहानियाँ', दीपा अग्रवाल की 'बिरजू और उड़नेवाला घोड़ा' (अनुवादः मोहिनी राव), जगदीश जोशी की 'एक दिन' (अनुवादः पृथ्वीराज मोंगा), मेरेलिन हर्श की 'मैं क्या बनूँगा', शांता रामेश्वर राव की 'मोहिनी और भस्मासुर' (अनुवादः रमेश बक्षी), राधा खंबादकोणे की 'सबसे प्यारा कौन' (अनुवादः पृथ्वीराज मोंगा), बैलिंदर धनौआ की 'टूटा पंखा तथा अन्य कहानियाँ' (अनुवादः द्रोणवीर कोहली), जयंती मनोकरण की 'सूरजमुखी और तितलियाँ' (अनुवादः मस्तराम कपूर), मदनलाल 'मधु' की 'जादुई घोड़ा', 'मक्सिम गोर्की की 'बाज का गीत', निकोलाई तेलेशोव की 'घर की ललक', होल्गर पुक्क की 'दो साहसिक कहानियाँ', 'आम जिंदगी की मज़ेदार कहानियाँ' तथा रोजमर्रे की कहानियाँ', शंकर की 'समझ का फेर', लेव टॉलस्टाय की 'तीन सवार' (अनुवादः चन्द्रकिरण राठी), एंड्रीला मित्रा की 'पक्की दोस्ती' (अनुवादः पृथ्वीराज मोंगा), वी. सत्येव की 'मैं भी', हैंस एंडरसन की कहानियाँ, गिजु भाई की 'बाल कथाएँ' तथा 'खड़बड़–खड़बड़' (अनुवादः सां. जे. पटेल) विताउते जिलिंस्काइते की 'छत पर फँस गया बिल्ला और तीन कहानियाँ', 'सर्कस की कहानियाँ', 'एशिया और प्रशांत क्षेत्र की कहानियाँ', 'आओ हँसे एक साथ' और पेतेर क्रीस्तेन असबयोर्नसेन तथा योगेन मूवे द्वारा संकलित 'नार्वेजीय लोककथाएँ' (अनुवादः सुरेशचंद्र शुक्ल 'शरद आलो')।

मदनलाल मधु द्वारा संकलित और अनूदित 'जादुई घोड़ा' किताब में रूसी, यूक्रेनी तथा उज्बेक आदि की कुल छत्तीस लोककथाएँ शामिल हैं। रूसी साहित्यकारों में मैक्सिम गोर्की की 'बाज का गीत' पुस्तक में उनकी दो विश्वप्रसिद्ध कहानियाँ शामिल हैं, 'बाज का गीत' और 'तूफ़ानी पितरेल पक्षी का गीत'। होल्गर पुक्क की कहानियाँ बच्चे की रोजमर्रा की जिंदगी के बीच ही एक ऐसा जादुई संसार रच देते हैं कि उनकी काबिलियत और उस्तादाना फ़न का कायल होना पड़ता है। 'रोजमर्रे की कहानियाँ', 'अजीबोगरीब किस्से', 'नए ज़माने की परिकथाएँ', 'आम ज़िंदगी की मज़ेदार कहानियाँ', 'दो साहसिक कहानियाँ' किताबों में शामिल होल्गर पुक्क की कहानियों का अनुवाद मीनाक्षी ने बड़े ख़ूबसूरत अल्फ़ाज़ में किया है। लिहाज़ा होल्गर पुक्क की ये कहानियाँ अनूदित होने के बावजूद बच्चों को एकदम अपनी कहानियाँ लगती हैं। इसके अलावा निकोलाई नोसोव की बच्चों के लिए लिखी गई चंचलता और नटखटपन से भरपूर एक से एक दिलचस्प कहानियाँ ग्यारह खण्डों में 'नजानु की कहानियाँ' शीर्षक से छपी है। इन सभी कहानियों का नायक नजानु नाम का एक चंचल और नटखट बच्चा नजानू है। हिन्दी में ग्यारह खंडो में छपे इन कथा पुस्तकों के शीर्षक हैं– 'फूलनगर के बौने', 'नजानु चित्रकार कैसे बना', 'नजानु कवि कैसे बना', 'नजानु ने उड़न गुब्बारा कैसे बनाया', 'चलो चलें' और 'फट गया गुब्बारा' तथा अपरिचितों के बीच' वगैरह–वगैरह। इन कहानियों के अनुवादक हैं सरस्वती हैदर, अचला जैन तथा संगमलाल मालवीय। विदेशी भाषा प्रकाशन गृह, पेरिस से छपी 'चीन की लोककथाएँ' (1998) भी उल्लेखनीय पुस्तक है, जिसमें बारह रोचक चीनी लोककथाएँ प्रस्तुत की गई हैं। नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित 'तेरह अनुपम कहानियाँ' भारतीय भाषाओं की तेरह सुन्दर और अनोखी कहानियों का संकलन है, जिसके खूबसूरत चित्र मिक्की पटेल ने बनाए हैं। इस पुस्तक में असमिया, बांग्ला, अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, मलयालम, मराठी, ओड़िया, पंजाबी, तमिल, तेलगु और उर्दू की प्रतिनिधि बाल कहानियाँ शामिल हैं। इनमें अनंतदेव शर्मा की 'विशेष पुरस्कार', सत्यजीत राय की 'सेप्टोपस की भूख', रस्किन बॉन्ड की 'सीता और नदी', पन्नालाल पटेल की 'अदल–बदल', भीष्म साहनी की 'गुलेलबाज लड़का' और बी. आर. भागवत की 'फास्टर फेंडे की करामात' दिलचस्प कहानियाँ हैं।

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में ही बांग्ला की बाल–विज्ञान संबंधी पुस्तकें हिन्दी में अनूदित होकर सामने आईं। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'विश्व परिचय' का अनुवाद आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने तथा जगदानंद राय की 'वैज्ञानिकी प्रकृतिकी' और 'गृह नक्षत्र' पुस्तकों का हिन्दी अनुवाद डॉ नन्द किशोर राय ने किया। बच्चों की भाषा में ही बच्चों को विज्ञान की रोचक जानकारियाँ और सही दृष्टि देने वाली अनूदित पुस्तकों में मीर नाबाजत अली की 'विश्व को बदल देने वाले आविष्कार' और 'विज्ञान के उपहार', जमाल आरा की 'पक्षी जगत', जित राय की 'वन्य जीवन' और लाइक फ़तेह अली की 'हमारी धरती' हर लिहाज से अव्वल है। जयंत विष्णु नार्लीकर की बच्चों के लिए लिखी ज्ञान–विज्ञान की पुस्तकों में 'ब्रह्माण की यात्रा' (1995, अनुवादक रू कृष्णकुमार) और 'अंतरिक्ष में विस्फ़ोट' खासा प्रसिद्ध है। मिलिंद प्रभाकर सबनीस की 'वन्दे मातरम' (2003) का हिन्दी अनुवाद मो.गो.तपस्वी ने किया। 'पुस्तकें जो अमर हैं' में मनोजदास ने वेद, पुराण, रामायण, महाभारत आदि के साथ–साथ पंचतंत्र, कथासरित्सागर और जातक कथाओं का वर्णन किया है। 'चाय की कहानी' (अनुवादक रू एम.एल गुप्ता) में अरूपकुमार दत्त दो उत्साही बच्चों के माध्यम से चाय के इतिहास का उल्लेख करते हैं। दिलीप एम. सालवी की पुस्तक 'युग प्रवर्तक आविष्कार' का अनुवाद आर.चेतन क्रांति ने किया है। 'आल अबाउट द स्टार्स' का अनुवाद 'सितारों की कहानी' शीर्षक से केशव सागर ने किया है। आइजिक ओसिमोव की पुस्तक 'हमें कैसे पता चला कि पृथ्वी गोल है' (2007) का अनुवाद अरविंद गुप्ता ने किया है। हिन्दी में अनूदित विज्ञान–लेखन में स्कॉलास्टिक से छपी चार पुस्तकों की शृंखला का भी अपना योगदान है। इन चारों पुस्तकों का अनुवाद अरविन्द गुप्ता ने खासी रोचक भाषा में किया है। बच्चों के लिए ज्ञान–विज्ञान की हिन्दी में अनूदित पुस्तकें छापने में नेशनल बुक ट्रस्ट, चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट, प्रकाशन विभाग, एकलव्य तथा प्रथम बुक्स की बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इनमें नेशनल बुक ट्रस्ट सबसे ऊपर रहा है। नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित ज्ञान–विज्ञान से जुड़ी ऐसी कई उल्लेखनीय पुस्तकें हैं जिन्हें अंग्रेजी या फिर अन्य भारतीय भाषाओं से अनुवाद या रूपांतरण के जरिए प्रस्तुत किया गया है। इस तरह की उल्लेखनीय अनूदित पुस्तकें हैंः कृष्णा सत्यानन्द की 'रेडक्रास की कहानी' (अनुवाद रू मोहनी राव), रस्किन बॉण्ड की 'चिड़ियाघर में'

(अनुवादः मस्तराम कपूर), 'भूकंप और जंगल की आग' (अनुवादः ऋषिकांत चतुर्वेदी), खालिद अशरद की 'हमारे त्योहार' (अनुवादः इजहार अहमद नदीम), कृष्ण चौतन्य की 'भारत ने आज़ादी कैसे जीती' (अनुवादः मोहनी राव), एम. आर. चिन्दबरा की 'यंत्र मानव और यंत्र मानव विज्ञान' (अनुवाद रू वासुदेव प्रसाद), हरिकृष्ण की 'हिमाचल प्रदेश' (अनुवादः नरेश नदीम), एस. एम. राजन की 'अंतरिक्ष का वरदान' (अनुवादकः सुरेश उनियाल), ई. आर. सी. दावेदार की 'एक वन्य जंतु वार्डन के साहसिक कारनामें' (अनुवादः सुरेश उनियाल), मोनिबा बॉब की 'मेहरू जे वाडिया की 'हम हिन्दुस्तानी' (अनुवादः रमेश बक्षी), वैजयंती सावंत टोणपे की 'साँप' (अनुवादः सुमन वाजपेयी), मार्टी की 'पेड़' (अनुवादः देव शंकर नवीन), इंद्रनील दास, जई और राम व्हिटेकर की 'कछुए और मगर' (अनुवादः हरिशरण सिंह विश्नोई), तंग शिवरासन की 'चलो चाँद की ओर' (अनुवादः विजयलक्ष्मी सुंदरराजन), प्रीति सेनगुप्ता की 'मेरी चुम्बकीय उत्तरी ध्रुव–यात्रा' (अनुवादः बृजमोहन गुप्त), हरेन्द्र धनौआ मोतीहार की 'कीटों का अनोखा संसार' (अनुवादः उमा बंसल), एम. शेषगिरी की 'प्रदुषण' (अनुवादः पंचमलाल चित्रकार), बी. चौतन्य देव की 'वाद्ययंत्र' (अनुवादः उमा अलका पाठक), चंचल सरकार की 'समाचार–पत्रों की कहानी' (अनुवादः नरेन्द्र सिंह) तथा स. आ. सप्रे की 'काम की प्रसंशा में' (अनुवादः रामचंद्र मिश्र) आदि प्रमुख है। इन कहानियों में विज्ञान, प्रद्योगिकी, वाणिज्य, गणित सम्बंधित विषय होते हैं।

हिन्दी में अनुदित बाल लोक कथाएँ प्रचूर मात्रा में हैं। इनमें 'अनूठा एशिया' में एशिया की लोक कथाएँ जिसमें भारत, फिलीपिंस, चीन, ईराक, तिब्बत, कोरिया और पाकिस्तान की कहानियाँ संकलित हैं। अमेरिका की लोककथा 'चतुर खरगोश ने आग चुराई', 'फूल खिलाने वाला बुड्ढा तथा अन्य जापानी लोक कथाएँ', 'मेहनत का मंत्र म्यामांर की लोककथा', 'गुस्सैल गस नार्वे की लोककथा', मुफ़्त के तीन ताइवान की लोककथा', 'पृथ्वी पर संगीत कैसे आया– अमेरिका की लोककथा', 'वन जी उठे दृ अमेरिका की लोककथा', समुद्र की देवी सेडना दृ अमरीका की लोककथा', 'हरी–भरी दृ वारली लोककथा', चालाक लोमड़ी और समझदार कीरकिंचो दृ अर्जेंटीना की लोककथा', गूरा का लकड़हारा दृ इथोपिया की लोककथा', खोदा पहाड़ निकला चूहा दृ चीन की लोककथा' इन सभी लोक कथाओं का पुनर्कथन अंग्रेजी में किया गया इसके बाद इनका हिन्दी अनुवाद किया गया।

बाल कहानियों में जीव–जंतुओं का वर्णन एवं उनसे जुड़ी कहानियों की परम्परा रही है। बच्चे स्वाभाविक रूप से प्रकृति और जीव–जंतुओं में आकर्षण रखते हैं, इस प्रकार बच्चे प्रकृति के अधिक नज़दीक होते हैं। मुख्य धारा के साहित्य में पर्यावरण जहाँ एक हाशिये पर रखा गया विषय है वहीं बाल साहित्य में पर्यावरण केंद्रीय भूमिका अदा करता है। मुख्य धारा के साहित्य में आदिवासी विमर्श एकमात्र ऐसी शाखा है, जिसका जुड़ाव पर्यावरण से रहता है। आदिवासी समाज पूर्ण रूप से अपनी जड़ों और पर्यावरण से जुड़े होते हैं इसलिए उनके साहित्य में भी जल, जंगल, ज़मीन की चिंता दिखाई पड़ती है। आदिवासी साहित्य का शविमर्शात्मक ख़ाकाश इस साहित्य को भी हाशिए पर डाल देता है। बाल साहित्य के सन्दर्भ में इसकी कहानी पूर्णतः भिन्न है। बाल साहित्य में पर्यावरण हमेशा से केंद्रीय भूमिका में रहा। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार बाल मन का पर्यावरण से जुड़ाव अधिक होता है। हम सभी जानते हैं कि बच्चों का मिट्टी, वृक्ष, जानवर, बारिश से स्वाभाविक लगाव होता है। बचपन में ही जब उन्हें पर्यावरण से सम्बंधित बाल पुस्तकें पढ़ने के लिए मिल जाती हैं तो वह अपने पर्यावरण के प्रति और अधिक सजग हो जाते हैं। पर्यावरण से सम्बंधित बाल पुस्तकों की बात करें तो परिमाण, संख्या और विषय–वस्तु तीनों ही दृष्टियों से इनकी संख्या अच्छी है। पर्यावरण से सम्बंधित कहानियों को दो रूपों में देख सकते हैं। पहला विज्ञान से सम्बंधित पर्यावरणीय कहानियाँ और दूसरा पर्यावरण की मनोरंजन प्रधान, काल्पनिक कहानियाँ। पहले प्रकार की कहानियों में, निर्मित हांडा की श्बाग की सैरश एक ऐसी कहानी है जो पाठकों को सरल और रचनात्मक ढंग से भारत में पाए जाने वाले अनार, कटहल, पपीता, केला, जामुन, अमरूद, नारियल, बेर, संतरा, चीकू, इमली और आम जैसे महत्त्वपूर्ण फलों के वृक्षों के इतिहास, महत्त्व तथा उनको कैसे उगाया जाता है के विषय में बताते हैं। मूल रूप से अंग्रेजी में श्ए वॉक एमोंग द ट्रीज़श शीर्षक से लिखित प्रस्तुत कहानी का अनुवाद मधुबाला जोशी ने किया है। हमारे पर्यावरण में जल, थल और आकाश सबकी सुरक्षा और खूबसूरती का अपना महत्त्व है। जितनी खूबसूरती और समृद्धि जमीन पर है उतनी ही आकाश और पाताल में भी है। राजीव आइप द्वारा लिखित एवं चित्रांकित कहानी श्डाइवश समुद्र के अंदर रहने वाले जीवों से हमारा परिचय कराती है प्रवाल, प्लैंक्टन, पैरट फ़िश, सी अनैमॉनी के आस–पास रहने वाली क्लाउन फ़िश, क्लीनर रास, रीफ़ ऑक्टोपस, घोस्ट पाइपफ़िश, व्हाइटटिप रीफ़ शार्क, हॉक्सबिल टर्टल, मैंटा रे, ड्यूगॉन्ग आदि विभिन्न प्रकार के मत्स्य जीवों से हमें रूबरू कराते हैं मूल अंग्रेजी में लिखित इस कहानी का हिन्दी अनुवाद श्गहरे समुद्र के अंदरश शीर्षक से ऋषी माथुर ने किया है। इसी प्रकार श्रेया यादव की कहानी श्जिस रात चाँद ग़ायब हो गयाश विभिन्न रंगों का प्रकाश छोड़ने वाले जलीय जंतुओं से हमारा परिचय कराती है। इस कहानी का हिन्दी अनुवाद पूजा ओमवीर रावत ने किया है। प्रबा राम और शीला प्रुइट द्वारा रचित श्ज़रा अपनी जीभ बाहर निकालनाश विभिन्न जीवों के जीभ के प्रकार से हमारा परिचय कराती हैं। मूल अंग्रेजी में लिखित इस कहानी का हिन्दी अनुवाद मधुबाला जोशी ने किया है। शैला धीर की श्गोबी का सबसे प्यारा मित्रश विभिन्न जानवरों के बीच मैत्री की कहानी को रेखांकित करती है। मूल अंग्रेजी में लिखित इस कहानी का हिन्दी अनुवाद दीपा त्रिपाठी ने किया है। हमारे पर्यावरण और जीव–जंतुओं को लेकर जिम्मेदार बनने की सोच, इन कहानियों द्वारा हममें उभरती है। इस प्रकार की कहानियों में प्रणव त्रिवेदी द्वारा लिखित और मनीषा चौधरी द्वारा अनूदित श्नोनोश और सेजल मेहता द्वारा लिखित और स्वागता सेन पिल्लै द्वारा अनूदित श्एक सैर जंगल कीश प्रमुख कहानियाँ हैं। श्नोनोश भारत में विलुप्त प्राय प्राणी हिम तेंदुए के संरक्षण की कहानी कहती है तो श्एक सैर जंगल कीश जंगल तथा जंगली जीवों के संरक्षण में तत्पर संगठनों की बात करती है। पर्यावरण पर आधारित ये बाल कहानियाँ परिचयात्मक होने के साथ–साथ विभिन्न जीवों और पर्यावरण की गहन जानकारी भी देती हैं। राजी सुंदरकृष्ण की कहानी श्इन्कू की गबर–गबरश धनेश पक्षी के जन्म से उनके पालन–पोषण, खान–पान तथा उनके स्वतन्त्र रूप से उड़ान भरने तक की कथा कहती है। इसी प्रकार राधा रंगराजन और अपर्णा कपूर द्वारा लिखित कहानी श्अरे...नहीं!श विभिन्न जीवों द्वारा खतरे का अहसास होने पर, होने वाली प्रतिक्रिया की कहानी कहती है। इस कहानी का हिन्दी अनुवाद वंशिका गोयल ने किया है। ये कहानियाँ न सिर्फ़ विभिन्न जीवों से हमारा परिचय कराती हैं बल्कि उनके विभिन्न गुणों के भी बारे में दिलचस्प ढंग से हमें जानकारी देती हैं। इस प्रकार की कहानियों में निसर्ग प्रकाश की श्ऊदबिलाव बनने के गुणश बेहतरीन कहानी है। इस कहानी का हिन्दी अनुवाद सुमन

बाजपेयी ने किया है। इसी प्रकार सेजल मेहता की कहानी श्आत्मदातक मछली और ज्वार तालश आत्मदातक मछली के ज्वार ताल से निकलने की कहानी कहती है। इस कहानी का हिन्दी अनुवाद सदफ़ जाफ़र ने किया है। वृक्षों को बचाने के लिए भारत के प्रसिद्ध आंदोलन चिपको पर आधारित जयंती मनोकरन द्वारा लिखित बाल कहानी श्चिपको चिपको वृक्ष बचाओश बाल दृष्टि से चिपको आंदोलन को समझने के लिए अनोखी किताब है। इस कहानी का हिन्दी अनुवाद ऋषि माथुर ने किया है। इसी प्रकार कार्तिक शंकर द्वारा लिखित 'टर्टल स्टोरी' ऑलिव रिडले कछुओं पर अद्‌भुत किताब है, जो इन कछुओं के जीवन से सम्बंधित है। इस कहानी का हिन्दी अनुवाद भावना पंकज ने किया है।

दूसरे प्रकार की कहानियों में, काल्पनिक मनोरंजक पर्यावरणीय कहानियाँ आती हैं। डॉ अमरदीप द्वारा अनूदित श्तारा की गगनचुम्बी यात्राश, तारा के प्रकृति के बीच विभिन्न यात्राओं का वर्णन है। रोहित कुलकर्णी द्वारा लिखित श्कुम्हार की सूअरीश एक कुम्हार के सूअर से प्रेम की कहानी कहती है। इसका हिन्दी अनुवाद आरती स्मित ने किया। मेगन डॉबसन सिप्पी द्वारा लिखित श्फरीदा की दावतश जीवों के प्रति स्वच्छंद प्रेम की कहानी कहती है। जहाँ वर्तमान समय में जीवों को पालतू बनाकर, उनकी आज़ादी को कैदकर प्रेम जताने की प्रवृति है, उसके विपरीत यह कहानी एक बच्ची फरीदा द्वारा जीवों को बिना कैद किए उनके खान–पान को व्यवस्थित रखने की कहानी कहती है। मूल अंग्रेजी में लिखित इस कहानी का हिन्दी अनुवाद नागराज राव ने किया है। अशोक राजगोपालन द्वारा रचित श्शेंडा, गालू और भेरश जानवरों के बीच खाल की अदला–बदली पर आधारित एक मनोरंजक कहानी है जो विभिन्न जीवों की प्राकृतिक संरचना का उत्सव मनाती है। मूल अंग्रेजी में लिखित इस कहानी का हिन्दी अनुवाद पूजा ओमवीर रावत ने किया है। लेखिका दीपा बलसावर की कहानी श्आक्क्षूश विभिन्न जानवरों के बीच हाथी की छींक कितनी बड़ी होती होगी, इस प्रश्न पर बहस की दिलचस्प कहानी है। ये कहानियाँ जीव–जंतुओं के पर्यावरण तथा जैविक तंत्र की खूबसूरती से हमारा परिचय कराती हैं। इसी प्रकार अबोध अरस द्वारा लिखित श्मेरा शहर, मेरे कुत्तेश मुंबई शहर के कुत्तों पर आधारित मज़ेदार कहानी है, जिसे हर कोई अपने आस–पास के कुत्तों से जोड़ सकता है। इस कहानी का हिन्दी अनुवाद अश्वनी व्यास ने किया। करणजीत कौर द्वारा लिखित श्कचरे का बादलश पर्यावरण पर आधारित एक महत्त्वपूर्ण बाल कहानी है। बेहद रचनात्मक ढंग से यह कहानी हमें हमारे पर्यावरण को स्वच्छ बनाए रखने की बात कहती है। पूनम श्रीवास्तव कुदेसिया ने इसका खूबसूरत हिन्दी अनुवाद किया है।

बाल साहित्य के अनुवादों के विकास में डिजिटल माध्यमों के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता क्योंकि आज बच्चे किताबों से कम मोबाईल, लैपटॉप, कंप्यूटर से अधिक पढ़ते हैं बच्चों का कहानियों से जुड़ने का तरीका भी बदल गया है। अब वह महज पढ़कर ही नहीं बल्कि देखकर, सुनकर भी पढ़ते हैं। इसलिए हम देखते हैं कि प्रथम बुक्स, चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट तथा भारतीय पुस्तक न्यास आदि प्रकाशक बच्चों के लिए रीड अलाउड (बोलकर पढ़ना) पाठ्य सामग्री भी तैयार करते हैं। ये डिजिटल माध्यम तथा चित्र बाल साहित्य के उत्कृष्ट अनुवाद के बहुत बड़े कारण हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि अंग्रेजी से हिन्दी में अनूदित बाल कहानियाँ अच्छी स्थिती में हैं। बाल साहित्य को लेकर काम करने बहुभाषी संस्थाओं ने हिन्दी में बाल सहित्य, विशेषकर बाल कहानियों के निर्माण का बेहतरीन कार्य किया है। हिन्दी में अनूदित बाल कहानियों में विषय की विविधता है। अनूदित बाल कहानियों में रस्किन बॉण्ड, आर. के लक्ष्मण, सुभद्रा सेन गुप्ता, रूपा पाई, रोहिणी निलेकणी, अशोक राजगोपालन आदि की कहानियाँ बाल पाठकों के बीच काफ़ी प्रसिद्ध है। पर्यावरण और जीव–जंतु बच्चों के दिल के बहुत करीब होते हैं इसलिए अनूदित बाल कहानियों में इनकी प्रधानता है।

संदर्भ सूची

1. अरस, अबोध, मेरा शहर मेरे कुत्ते, अश्वनि व्यास (अनु), प्रथम संस्करण, प्रथम बुक्स, 2019, मुद्रित
2. कपूर, अपर्णा, अरे नहीं, वंशिका गोयल (अनु), प्रथम संस्करण, प्रथम बुक्स, 2019, मुद्रित
3. कुमार, अनुज, रेखा पाण्डेय, 'बाल साहित्य और आलोचना', प्रथम संस्करण, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, 2016, मुद्रित
4. कुलकर्णी, रोहित, कुम्हार की सूअरी, आरती स्मित (अनु), प्रथम संस्करण, प्रथम बुक्स, 2018, मद्रित
5. कौर, करणजीत, कचरे का बादल, पूनम श्रीवास्तव कुदेसिया, प्रथम संस्करण, प्रथम बुक्स, 2017, मुद्रित
6. त्रिवेदी, प्रणव, बर्फ़ का राजा नोनो, मनीषा चौधरी (अनु), प्रथम संस्करण, प्रथम बुक्स, 2008, मुद्रित बुक्स, 2018, मुद्रित
7. प्रकाश, निसर्ग, ऊदबिलव बनने के गुण, सुमन बाजपेयी (अनु), प्रथम संस्करण, प्रथम बुक्स, 2019, मुद्रित
8. जैन, दीपिका, अरण्या जैन, 'पृथ्वी पर संगीत कैसे आया', मनीषा चौधरी (अनु), तृतीय संस्करण, प्रथम बुक्स, नई दिल्ली, 2008 , मुद्रित
9. जैन, गीतिका, 'जंगल की धारियाँ', जया पाण्डेय (अनु), पाँचवा संस्करण, भारतीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली, मुद्रित
10. बॉन्ड, रस्किन, 'नाइट ट्रेन ऐट देओली', ऋषि माथुर (अनु), द्वितीय संस्करण, राजपाल, नई दिल्ली, 2015, मुद्रित
11. देवसरे, हरिकृष्ण, 'हिन्दी बाल साहित्य एक अध्ययन', प्रथम संस्करण, आत्माराम एंड संस, नई दिल्ली,1969
12. देवसरे, हरिकृष्ण, 'बाल साहित्य के सरोकार', प्रथम संस्करण, यश पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2007, मुद्रित
13. देशमुख, नबनीता, 'सबसे पहला घर', प्रथम संस्करण, राजेश खर (अनु), प्रथम बुक्स, नई दिल्ली, 2019, मुद्रित
14. पाण्डेय, हेमा, 'अनूठा एशिया', तृतीय संस्करण, प्रथम बुक्स, नई दिल्ली, 2017, मुद्रित
15. पाण्डेय, हेमा, 'फूल खिलाने वाला बुड्ढा तथा अन्य जापानी लोक कथाएँ', तृतीय संस्करण, प्रथम बुक्स नई दिल्ली, 2007, मुद्रित
16. मनु, प्रकाश, 'हिन्दी बाल साहित्य का इतिहास', प्रथम संस्करण, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2018, मुद्रित
17. मनोकरन, जयंती, 'चिपको चिपको वृक्ष बचाओ', ऋषि माथुर (अनु) साँतवा संस्करण, प्रथम बुक्स, नई दिल्ली, मुद्रित
18. मेहता, सेजल, एक सैर जंगल की, स्वागता सेन पिल्लै (अनु), तृतीय संस्करण, प्रथम बुक्स, 2015, मुद्रित

19. मेहता, सेजल, आत्मदातक मछली और ज्वार ताल, सदफ़ जाफ़र (अनु), द्वीतिय संस्करण, प्रथम बुक्स, 2018, मुद्रित
20. राजगोपालन, अशोक, शेंडा, गालू और भेर, पूजा ओमवीर रावत (अनु), तृतीय संस्करण, प्रथम बुक्स, 2019, मुद्रित
21. शंकर, कार्तिक, टर्टल स्टोरी, भावना पंकज (अनु), पाँचवा संस्करण, प्रथम बुक्स, 2012, मुद्रित
22. सुधाकर, सुमती, 'एक आधुनिक लोककथा जीवा और जतिन के संग रू जंगल में ख़तरा', ग्रेस्ट्रोक (अनु), चौथा संस्करण, प्रथम बुक्स, 2010, मुद्रित
23. सुधाकर, सुमती, 'एक आधुनिक लोककथा जीवा और जतिन के संग रू बरखादेवी की खोज', ग्रेस्ट्रोक (अनु), चौथा संस्करण, प्रथम बुक्स, 2010, मुद्रित
24. सेन, बेनीता, 'क्या तेरा, क्या मेरा रू वारली लोककथा', मनीषा चौधरी (अनु), द्वितीय संस्करण, प्रथम बुक्स, नई दिल्ली, 2007, मुद्रित
25. सेशाद्री, वीना, 'गूरा का लकड़हारा– इथोपिया की लोककथा', ऋतु सिंह (अनु), तृतीय संस्करण, प्रथम बुक्स, नई दिल्ली, 2006